

ASHA ARCHIVES

1.023

श्री ५५५

स्वस्ति श्री गणेशाय नमः ॥ १ ॥ भज गोविन्दं भज गोविन्दं गोवि
न्दं भज मूढ मते ॥ प्राप्ते सन्निहते नरैः लो न हिन हिरक्षुति दुष्ट
अ करणे ॥ बाल स्तावत् रुद्राश्च कृष्ण स्तावत्त ह एरि रक्तो
रुद्र स्तावच्चीता मग्न परमेव स्मरणी कोपिन ले ग्न ॥ भज गोविन्द
॥ १ ॥ अंग गलितै पलितै मुण्डं दशन विहिनं जातै तुण्डम् ॥ व
क्षीयात गृहीत्वा दण्डम् तदुपि न मुञ्चत्या सापिण्डम् ॥ भज

गोविन्दं ॥ २ ॥ दिनमपि रजनी साया प्रातश्चि शिरव सत्रप
न पयात ॥ काले कीडति गच्छत्यायुस्तदपि न मुञ्चत्या सापि
युः ॥ भज गोविन्दं ॥ ३ ॥ नारी स्तने भरण निवेशं दृष्ट्वा मार्ग मो
हावेशं ॥ तन मांश वसादिविकार म्मनसि विचारै र्वारै र्वारै
॥ भज गोविन्दं ॥ ४ ॥ अग्रे वन्दिष्ये हे मानू रान्त्रौ चित्तु कसम
पित जानु ॥ करतल भिक्षा तस्तल वासे स्तदपि न मुञ्चत्या सा

पासै॥ भजोगोविन्द॥ ५॥ रथी कर्प्य विरचित कथा पु
या पुन्य विवर्जित यथा॥ नाहं तत्त्वं नायं लोकस्तदपि कि
र्थं क्रियते शोकः॥ भजोगोविन्द॥ ६॥ वयसि गते कः कामवि
कारः सुखे निरेकः कासारः॥ क्षीणो विरगे विने कः परिवारे
कः साते तत्त्वे कः सन्सारः॥ भजोगोविन्द॥ ७॥ यावद्यत्नमुपा
र्जनशक्तस्तानि जपरिवारो रक्तपञ्चाखावतिजर्जरदेह

वार्ता कोपिनपिन पृच्छति गेहे॥ भजोगोविन्द॥ ८॥ जरिलो मु
राडीलुं रागीत केश कारवाया वर बहु कृत वेशाः॥ पश्यन्नोपिन
पस्यन्निलोका उदर निमित्तं बहु कृत वेषाः॥ भजोगोविन्द
॥ ९॥ गेयं गीतानां स सहस्रं ध्वेयं श्रीपति रूपमजे सं॥ स्थ
यं सज्जन संगति नित्यं देयं दीनजना पचवित्रं॥ भजोगोविन्द
॥ १०॥ भगवद्गीता किञ्चिद्गीता गंगा जलव करिका पीता॥

एना कारि मुरारे रच्चीत स्य यमोपिन करेति चर्चा ॥ भज गोवि
 न्दं ॥ १११ ॥ पुनरपि मरणं पुनरपि जननं पुनरपि जननी जठ
 रेशयनम् ॥ इह सन्सारे भयवित्तारे कृपया पाहि मुरारे ॥ भ
 ज गोविन्द ॥ ११२ ॥ कोहं कस्मात्कृत आयात कोमो जननी को
 मेतात ॥ इति परिभाषित सर्वा सारं सर्वं त्वत्का स्वप्रविचारम्
 ॥ भज गोविन्द ॥ ११३ ॥ इति श्रीशंकराचार्यविरचितं भज गोविन्द

त्रयोदश श्लोके स्त्रोत्रम् शुभम् ॥ ॥ शके १७५१ ॥ श्रीसम्ब
 त १८८६ साल मिति वैत्रचदि रोज ५ लिखितम् भज गोवि
 न्द स्त्रोत्रम् समः लक्ष्मीनारायण स्वये सरणम् शुभम्
 यादश पुस्तकम् दृष्टा तादृशं लिखितं मया यदि सुखम्
 भवामम दोषो न दीयेते ॥ ११ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

म ज गी वि न्द स्तोत्र

आशा मन्त्रवाचि

1.023

ASHA ARCHIVES